गुजरात के अभिलेख

डॉ० रीना
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष
साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद,
जिला–बिजनौर, उ०प्र०

सारांश

अभिलेख इतिहास की अमूल्य निधि धरोहर हैं। अभिलेख में प्रायः विभिन्न राजाओं की प्रशंसा ही प्रमुख विषय रही है। अभिलेख इतिहास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। गुजरात में चालुक्यवशं का बहुत विस्तार था। गुजरात के चालुक्यवंश के जो अभिलेख है उनके कुछ अभिलेख अति संक्षिप्त, खण्डित और अधूरे हैं अधिकांश अभिलेखों में प्रायः एक ही भाषा–शैली तथा पद्धति को अपनाया गया है। इनके लगभग 75 अभिलेख सम्पादित हो चुके हैं। इन अभिलेखों में विक्रम, शक सम्वत् तिथियाँ अंकित है। चालुक्य वंशीय अभिलेखों में धर्म इत्यादि विषयों पर काफी कुछ देखने को मिलता है। चालुक्य वंश अभिलेख काव्यात्मक दृष्टि से भी अति सुन्दर पद्य शैली में लिखे गये हैं। ऐसा लगता है कि मानो उन पर हेमचन्द्र, कालिदास आदि विद्वान कवि का प्रभाव रहा है। ईसा की ग्याहरवीं शताब्दी में गुजरात में चालुक्यों की शक्ति का श्री गणेश हुआ है। चालुक्य वंशीय राजाओं के शासन, व्यक्ति, राजनीति कला आदि का ज्ञान तत्कालीन अभिलेखों, प्रस्तरों व ताम्रपत्रों पर उल्लिखित शासन–पत्रों तथा साहित्यिक रचनाओं से होता है। चालुक्य वंशीय अभिलेखों का वर्णन इस प्रकार है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ० रीना,

"गुजरात के अभिलेख"

शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 252–257
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 37

आबू अभिलेख

प्रस्तुत अभिलेख सुन्दर पद्यात्मक काव्य का उदाहरण है। इसमें चालुक्य वंश के साथ उनके मन्त्री वस्तुपाल और तेजपाल का वर्णन किया गया है। इस लेख का सम्पादन – एच0 ल्यूडर ने ''एपिग्राफिया इण्डिया'' भाग–VIII पृ0 सं0 208 पर किया है।

श्रीधर देवपट्टन

इसके प्रारम्भ में तीन पद्यों में शिव की स्तुति की गई है।[1] इसके सोमेश्वर के मंदिर और वस्त्राकुल के सदस्यों की प्रशंसा की गई है। अन्तिम पद्य बहुत खण्डित है वह भाग भी खण्डित है जहाँ कवि का नाम है।

वेद नगर प्रशस्ति

इस अभिलेख में मूलराज, चामुण्डराज, वल्लभराज, दुर्लभराज, भीम, करण, जयसिंह और कुमारपाल के शासन और विजयों का वर्णन है।[2]

गिरनार अभिलेख

यह पद्यात्मक लेख है।[3] यह अभिलेखो में प्रसिद्ध गिरनार पर्वत पर स्थित संग्राम सोनी के मन्दिर के पश्चिम में नन्देश्वर की मूर्ति के पास स्थित है। कुमारपाल जैन धर्म के प्रति उदार दृष्टि रखता था।

किरदू अभिलेख

यह अभिलेख में महाराजाधिराज भीम द्वितीय के शासनकाल में लिखवाया गया था। भीम द्वारा किरदू के सामन्त मदनाब्राह्मणदेव और उनके मुख्यमंत्री तेजपाल का नाम आया है। इसमें तेजपाल की पत्नी का नाम खण्डित है और भगवान की मूर्ति का नाम भी खण्डित है। हो सकता है कि वह सोमेश्वर की मूर्ति हो और यह अभिलेख सोमेश्वर मन्दिर में मिला हो।[4]

गाला अभिलेख

यह अभिलेख कुमारपाल के समय वि0स0 1201 में लिखवाया गया है इस लेख की तिथि का एक अंक खण्डित है।[5] यह अभिलेख गद्यात्मक है। कुमारपाल के महामात्य महादेव इनके प्रशासन की देखभाल करते थे। इनके दो अन्य मन्त्रियों के भी नाम मिलते हैं। जो क्रमशः इस प्रकार है– ''अम्बप्रसाद'' और ''चाडदेव'' ये दोनो काठियावाड में नियुक्त किये थें बाद का अभिलेख खण्डित होने के कारण पढने योग्य नहीं है। इसलिए अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। यह अभिलेख काठियावाड के राज्य के गाला गाँव में देवी के मन्दिर के दरवाजे के ऊपर लिखा हुआ मिला है।

उदयपुर स्तम्भ अभिलेख

इस अभिलेख में अक्षरत्रयी के अवसर पर उदयपुर ब्रह्मगिरी चतुष्टी में समवता के गांव का आधा भाग अपने मष्त माता–पिता के आत्मा की शान्ति के लिए दे दिया गया था। यह गद्यात्मक शैली में लिखा गया है। यह उदयपुर से प्राप्त हुआ है।

बम्बई रायल एशियाटिक सोसायटी ग्राफ्ट

भीम द्वितीय द्वारा इस दान–पत्र का उल्लेख किया गया है, लेकिन ''ई0 हुल्श'' ने इसको

करण–प्रथम के ''सनक दान–पत्र'' में बताया है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये दोनों अभिलेख वटेश्वर ने लिखे है। महासन्धिविग्रहीक चण्डीश्वरण ने दान–पत्र लिखा है। अतः सम्भव है कि भीम–प्रथम के समय ही लेख लिखा गया हो। प्रस्तुत अभिलेख में दान का वर्णन किया गया है।[6]

डोहड अभिलेख

यह अभिलेख डोहड में एक जलाशय के पास मिला हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस अभिलेख की पुनरूक्ति की गई है। यह लेख राजा जयसिंह सिद्धराज के समय में लिखा गया है। इस अभिलेख में दो तिथियाँ प्रतीत होती हैं एक तिथि जयसिंह के समय विक्रम सम्वत 1196 की है और दूसरी कुमारपाल के समय विक्रम सम्वत् 1202 की। इसमें जयसिंह के लेख की सभी बाते पुनरूक्त की गई है।[7]

चित्तौड़गढ अभिलेख

यह अभिलेख पद्यात्मक है। इस अभिलेख में कुमारपाल द्वारा आधुनिक चित्तौडगढ में त्रित्रकूट पर्वत पर यात्रा और इस अवसर पर दान देने का वर्णन है। इसके पहले पाँच पद्यों में शिव और सरस्वती की पूजा की गई है। उसके पश्चात सिद्धराज और कुमारपाल का वर्णन किया गया हे। कुमारपाल ने शाकम्भरी के राजा को हराया और सपादलक्षम राज्य को नष्ट कर शालिपुर चला गया। उसके बाद चित्रकूट पर्वत पर जाकर वहाँ के मन्दिरों, स्थानों ओर झीलों का वर्णन किया है। यह अभिलेख राजपुताना के उदयपुर के चित्तौड़गढ में मोकला जी के मंदिर से प्राप्त हुआ है।[8]

पाली अभिलेख

पालिका शहर को ही आधुनिक पाली के नाम से जाना जाता है। कुमारपाल एक शक्तिशाली राजा था, उसने शाकम्भरी के राजा को हराया जिसे चहमान राजा अर्णोराज के नाम से जाना जाता है। इनका मन्त्री महादेव था।[9] उसके बाद 'पालिका विषय' का नाम आया है जहाँ चामुण्डराज का शासन था। इससे ज्यादा इस अभिलेख में जानकारी नहीं मिलती।

जलोर अभिलेख

जलोर अर्थात् जाबलिपुर से सम्बन्धित काञ्चनगिरि के किले पर यह बनवाया गया था। दूसरे भाग में दक्षिणी मारवाड के भगवान और चहमान परिवार के आभूषण महाराज समरसेन देव के आदेशानुसार वि0स0 1242 में यशोवीर पुत्र परशु द्वारा बनवाया गया था।[10] कुमर विहार नामक इस मन्दिर में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित कर विक्रम सम्वत् 1221 में यह मंदिर बनवाकर सच्चे जैन नियमों को धारण करने के लिए देवाचार्य के संरक्षण में दिया गया था। यह अभिलेख एक मस्जिद के ऊपर खुदा हुआ मिला था।

किरदु शिव–मन्दिर अभिलेख

यह अभिलेख कहीं प्रकाशित नहीं किया गया है। लेकिन डी0बी0 भण्डारकर ने इसके विषय में थोडी से जानकारी ''नार्थ इण्डियन इन्सक्रप्शनज'' संख्या 250 पर दिया गया है। इसका समय विक्रम सम्वत् 1198 है।

प्राची अभिलेख

यह अभिलेख काठियावाड़ में सोमनाथ पट्टन से 15 मील दूर प्राची के पूर्व में मिला हैं।[11] इस अभिलेख में चालुक्यवंशी राजा मूलराज का वर्णन मिलता है। इनका नाम अभिलेख में खण्डित अवस्था में प्राप्त हुआ है। चामुण्डराज, दुर्लभराज, भीमदेव–1, करणदेव, जयसिंह और कुमारपाल ने सोमनाथपट्टन में कक्कक के पुत्र गष्मदेव को वहां का राज्यपाल बनवाया। गृमदेव ने धर्मादित्य के खिलाफ एक सफल आन्दोलन किया। इस अभिलेख का नीचे का भाग खण्डित है और अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी नहीं मिलती है।

उज्जैन अभिलेख

इस लेख का समय विक्रम सम्वत् 1195 है।[12] इसमें भगवान कीर्तिनारायण का नाम आया है परन्तु बाद का भाग खण्डित है। यह अभिलेख चालुक्य वंश और परमावंश के इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है जयसिंह ने यशोवर्म्न को हराकरण अवन्ति पर विजय प्राप्त की थी। जो स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं होता है।

पालनपुर दान–पत्र

इसका समय वि0सं0 1120 है यह अभिलेख पूर्णचन्द नेहर को पालनपुर में प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख में गुजरात के राजा चालुक्यवंशी भीम–1 के शासन के विषय में बताया गया है। इसने इला पर अपना पड़ाव डाला ओर वरणावधाग्राम के जनक नामक मोदा ब्राह्मण को तीन हला भूमि दान में दी और इस भूमि की सीमा भी बताई है वार–असावली पद्रा, चहिमद्रयाल और केशव और अन्त में दान–पत्र लिखने वाले कायस्थ कक्कक का नाम दिया है।[13]

फ्रग्मेन्ट ऑफ कीर्तिस्तम्भ इन्सक्रिप्शन्स

इस अभिलेख में 108 पद्य माने जाते हैं।[14] यह अभिलेख जयसिंह के कीर्ति स्तम्भ के रूप में स्थित है यह अभिलेख पूर्ण अवस्था में प्राप्त नहीं हुआ। इस अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि सिद्धराज ने जनता के कल्याण के लिए अनेक कार्य किये, झीलों का निर्माण करवाया। इस अभिलेख से हमे चार वर्णों की भी जानकारी प्राप्त होती है। अभिलेखों में रेवा नदी का मात्र नाम आया है इससे अधिक कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। यह अभिलेख गुजरात के इतिहास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकता था।

साम्बर अभिलेख

साम्बर अभिलेख के प्रारम्भ में शिव की स्तुति की गई है। उसके पश्चात चालुक्यवंशीय राजाओं की प्रशंसा दृष्टिगोचर होती है। इसमें चालुक्यवंशावली के विषय में जानकारी मिलती है– मूलराज, चामुण्डराज, दुर्लभराज, भीम, करण और जयसिंह आदि के विषय में पता चलता है।[15] इस अभिलेख में 28 पंक्तियां हैं यह अभिलेख साम्बर के उमर–शाह–काकून से मिला है। इसके बाद यह जोधपुर राज्य के ''सरदार संग्रहालय'' में ले जाया गया है।

नन्ना अभिलेख

इस अभिलेख में चालुक्यवंश के राजाओं का वर्णन मिलता है। मूलराज, चामुण्डराज, दुर्लभ, भीमदेव, कर्ण, जयसिंह, कुमारपाल आदि चालुक्यवंशी राजा थे। इसमें अणहिलपाटक के

राजा कुमारपाल द्वारा सोमग्रहण पर्व पर भगवान से प्रार्थना कर पूर्वजों और अपने यश की वृद्धि के लिए दान का वर्णन है। इस अभिलेख में भगवान व्यास द्वारा किया गया है। इस अभिलेख का समय विक्रम सं0 1212 है।[16]

नन्ना ताम्र–पत्र

नन्ना ताम्र पत्र का समय विक्रम सम्वत् 1219 है और इसका प्रकाशन "आर्कलोलिकल सर्वे ऑफ इण्डिया" ने वर्ष 1936–37 की पृ0सं0 120 पर किया है।

बाली अभिलेख

यह अभिलेख राजपुताना के जोधपुरा राज्य के बाली में भुगतामाता के मन्दिर के चौक में स्तम्भ के ऊपर लिखा हुआ है। कुमारपाल अणहिलपाटक का शासक था। महादेव उनका अमात्य था। दण्डनायक विजयजलदेव नडूल का राज्यपाल था और बाली ग्राम के भगवान अनुपमेश्वर को दान अर्पण किया गया है। विजयजलदेव द्वारा देवी भूस्रण की पूजा के लिए बाली में एक ग्राम और भूमि दान में दी गई है।[17] इसका समय विक्रम सम्वत् 1216 है।

नाडूल पत्र

यह अभिलेख कायस्थ पण्डित महीपाल ने लिखा थां यह दान–पत्र उनके सामन्त, योगराज के पौत्र, वस्तुराज के पुत्र श्री प्रताप सिंह द्वारा बनाया गया था। प्रतिदिन मिले दान के द्वारा उसने तीन जैन मन्दिर बनवाये। नदूतडागिका में महावीर का, अरष्टिनेमि का तीसरा लम्बदडीग्राम में अजित स्वामीदेव का दान न करने पर हजारों वर्षों तक ब्राह्मण और गौ हत्या से लिप्त रहने की बात भी बताई है। कुमारपाल ने इसका समय 1213 विक्रम सम्वत्, में उत्कीर्ण करवाया।[18]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुजरात के चालुक्य वंशी अभिलेखों के द्वारा वहाँ की साहित्यिक रचना राजाओं का, शासन का, प्रस्तरों व ताम्र पत्रों पर उल्लिखित शासन पत्रों, राजनीति, कला आदि का ज्ञान मिलता है। वैसे तो गुजरात के चालुक्य वंशों के अभिलेख लगभग 70 से भी अधिक स्थानों से प्राप्त हो चुके है। परन्तु यहाँ कुछ ही अभिलेखों का वर्णन किया गया है। जैसे आबू अभिलेख, श्रीधर देवपट्टन प्रशस्ति, वेदनगर, किरदू, गाला, उदयपुर स्तम्भ अभिलेख, बम्बई रायल एशियाटिक सोसायटी ग्राफ्ट, डोहड, चित्तौडगढ़, पाली, जलोर, किरदू शिव मन्दिर अभिलेख, प्राची अभिलेख, उज्जैन अभिलेख, पालनपुर दान–पात्र, फ्रग्मेन्ट ऑफ कीर्ति स्तम इन्सक्रिपशन्स, साम्बर अभिलेख, नन्ना अभिलेख, नन्ना ताम्रपत्र, बाली और नाडलू पत्र हैं। प्रस्तुत अभिलेखों से गुजरात के चालुक्य वंश के अभिलेखों का महत्व पर प्रकाश पड़ता हैं। इन अभिलेखों के अध्ययन से इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि ये अभिलेख काव्य–तत्वों की दृष्टि से विकसित नहीं है क्योंकि अभिलेखों का उद्देश्य किसी घटना विशेष को उल्लिखित करना या आश्रयदाता की प्रशंसा करना होता था। अतः समय, स्थान एवं विषय की सीमा में बंधकर रचना करने में सूक्ष्म साहित्य दृष्टि को अपनाना सम्भव नहीं था, फिर भी स्वाभाविक रूप से अभिलेखों में रस, गुण, छन्द, अलंकार आदि साहित्यिक विशेषताएं पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है।

संदर्भ

1. एपिग्राफ्रि या इण्डिका, भाग–II पृ0–437
2. एपिग्राफ्रि या इण्डिका, भाग–I पृ0–293
3. इण्डियन एण्टीक्वेरी भाग–I पृ0–71
4. पूना ओरियण्टल, भाग–1, पृ0–41
5. डी0बी0 डिसकालकर, पूना ओरियण्टल, भाग–15, पृ0–40
6. जे0एफ0 फ्लीट ''इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग–XVIII, पृ0–108
7. एच0एच0 ध्रुव, इण्डियन एक्टीक्वेरी, भाग–X, पृ0–158
8. एफ0 कीलहार्न, एपिग्राफिया इण्डिका, भाग–II, पृ0–421
9. डी0बी0 डिसकालर, पूना ओरियण्टल, भाग–1, पृ0–41
10. आर0जी0 भण्डारकर, एपिग्राफिया इिण्डिका
11. डी0बी0 डिसकालकर, पूना ओरियण्टल भाग–1, पृ0–38
12. डी0बी0 भण्डारकर, इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग–XLII, पृ0–258
13. के0ए0 दीक्षित, एपिग्राफिया इण्डिका, भाग–XXI, पृ0–171
14. आर0सी0 मोदी आल इण्डिया ओरियण्टल कान्फ्रेंस भाग–VII, पृ0649
15. बी0ए0 रियू, इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग–LVIII, पृ0–234
16. जी0एस0 ओझा, अन्वल ऑफ दि भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्सटीट्यूट, भाग–XXIII, पृ0–314
17. डी0बी0 डिसकालकर, पूना ओरियण्टल, भाग–I, पृ0–44
18. आर0जी0 भण्डारकर, इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग–XLI, पृ0–202